

नया
ज्ञानोदय

150
गरिमामय 150वाँ अंक

विशेषांकों की परम्परा में
संग्रहणीय अंक
अगस्त 2015 में प्रकाश्य

समय के
शीर्ष स्थानीय लेखकों
का
स्मरणीय समागम
[प्रथम सोपान]

सम्पादक : लीलाधर मंडलोई

सम्भावित पृष्ठ : 250; मूल्य : 150 रुपये
अपनी प्रति अग्रिम सुरक्षित कराएँ

स्वर्ण जयन्ती वर्ष



ज्ञानपीठ पुरस्कार
1965-2015



भारतीय ज्ञानपीठ
ज्ञान
गरिमा
के 70 वर्ष

भारतीय ज्ञानपीठ

18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, पोस्ट बॉक्स
नं. 3113, नई दिल्ली-110 003

फोन : 011-2462 6467, 2465 4196, 2469
8417, 2465 6201; फैक्स : 011-2465 4197;
ई-मेल : nayagyanoday@gmail.com /
bjnanpith@gmail.com

www.jnanpith.net



भारतीय ज्ञानपीठ
संस्थापक
श्रीमती रमा जैन
श्री साहू शान्तिप्रसाद जैन

नया ज्ञानोदय

भारतीय ज्ञानपीठ की मासिक साहित्यिक पत्रिका
विशेषांक अंक 150, अगस्त 2015

सम्पादक
लीलाधर मंडलोई



दह

सच्चा साहित्य व्यक्ति को समष्टि से एकाकार करने वाली निरन्तर गतिमयी कर्मधारा है, अतः उसकी प्रक्रिया का जटिल होना स्वाभाविक है। सम्भवतः इसलिए भारत की आर्षवाणी ने कवि की परिभाषा में 'कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूः' कहा है। वह मनीषी होता है, क्योंकि वह सब काल खंडों का संकलन करता है, वह समष्टि से एकाकार होने के कारण व्याप्त भी होता है और स्वयंभू भी है, क्योंकि कोई उसकी रचना नहीं करता। साहित्य इतना महत्वपूर्ण है कि आज भी कोई युद्धप्रिय तथा विज्ञान के चरम बिन्दु तक पहुँचा हुआ देश यह स्वीकार करने को प्रस्तुत नहीं है कि उसके पास साहित्य नहीं है या उसे साहित्य और साहित्यकार की आवश्यकता नहीं है। कारण स्पष्ट है। साहित्य जीवन के विकास का ऐसा अभिन्न साथी रहा है कि उसका अभाव बर्बरता या असभ्यता का पर्याय माना जाएगा। इसी से सब प्रकार के देश उसकी स्थिति को स्वीकार करते हैं, चाहे वे उसे अपनी प्रवृत्ति के अनुरूप ढालने के लिए सब वैध-अवैध प्रयत्न करते रहते हैं।

—महादेवी वर्मा

ज्ञानपीठ पुरस्कार, 1982

नया ज्ञानोदय

आधुनिक भावबोध, कला संचेतना और नवीनता की
प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

विशेषांक अंक 150, अगस्त 2015

साहू अखिलेश जैन
प्रबन्ध न्यासी, भारतीय ज्ञानपीठ

प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ

18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड,
नई दिल्ली-110 003

फोन : 011-2462 6467, 2465 4196, 2469 8417, 2465 6201

फैक्स : 011-2465 4197;

ई-मेल : nayagyanoday@gmail.com / bjnanpith@gmail.com

वेबसाइट : www.jnanpith.net

Nayā Gyānodaya

A Literary Monthly Magazine

Editor : Leeladhar Mandloi

Language : Hindi

Published by **Bharatiya Jnanpith**

18, Institutional Area, Lodi Road,
New Delhi-110 003

मूल्य :

150 रुपये

व्यक्तियों के लिए :

वार्षिक : 300 रुपये / त्रैवार्षिक : 800 रुपये

पंचवार्षिक : 1200 रुपये / आजीवन : 5000 रुपये

संस्थाओं के लिए :

वार्षिक : 350 रुपये / त्रैवार्षिक : 1000 रुपये

पंचवार्षिक : 1650 रुपये / आजीवन : 5000 रुपये

विदेशों के लिए :

हवाई डाक : एक अंक 6 डॉलर / वार्षिक 60 डॉलर

नया ज्ञानोदय की पीडीएफ फाइल ई-मेल से प्राप्त करने हेतु शुल्क

10 डॉलर वार्षिक (विदेश), 200 रुपये वार्षिक (भारत)

विशेष जानकारी के लिए marketing@jnanpith.net सम्पर्क करें

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक, प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है।

प्रकाशित रचनाओं के विचार से भारतीय ज्ञानपीठ का सहमत होना आवश्यक नहीं।

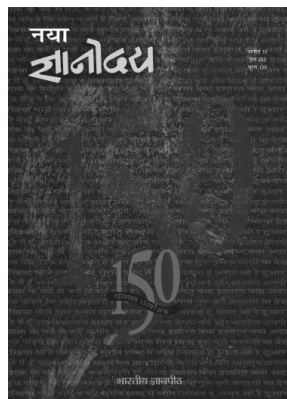
समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अन्तर्गत विचारणीय।

शुल्क 'भारतीय ज्ञानपीठ'

(Bharatiya Jnanpith) के नाम से उपर्युक्त पते पर भेजें।

(केवल मनीआर्डर / चेक / बैंक ड्राफ्ट से)

(दिल्ली से बाहर के चेक में 35 रुपये अधिक जोड़ें)



हर अंक विशेष

विशेषांक, अगस्त 2015

भवदीय / 5

ज्ञान गरिमा के 70 वर्ष

इन्द्रनाथ चौधरी / 10

अशोक वाजपेयी, अजित कुमार / 11

दिनेश मिश्र, राजी सेठ / 12

प्रभाकर श्रोत्रिय, मृदुला गर्ग, अरविन्द कुमार / 13

गंगाप्रसाद विमल, अशोक भौमिक / 14

माधव हाड़ा / 15

देवेन्द्रराज अंकुर, अवनीश मिश्र / 16

खाक के पर्दे से

मार्टिन लूथर किंग : मेरा स्वप्न / 18

सुभाषचन्द्र बोस : बातें जिनमें लपट आग की / 21

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद : शान्ति का सीधा रास्ता / 24

रवीन्द्रनाथ टैगोर : जब जीवन और जगत एक प्राण हुए / 26

कहैं कबीर सुनो हो गोरख

पाब्लो पिकासो से फ्रांकोए गिलोका की बातचीत / 30

हरिशंकर परसाई से मौसम-संवाद / 32

कृष्ण हेब्बार से एक भेंट / 34

नारायण श्रीधर बेन्द्रे से मुलाकात / 36

स्मरण विशेष : ए.पी.जे. अब्दुल कलाम / 39

इबारात क्या इशारत क्या अदा क्या

आशापूर्णा देवी : दृष्टि-चेतना ने लिखने की ओर प्रवृत्त किया / 44

कुर्तुलुलऐन हैदर : मुझे लिखना ज़रूरी लगा / 47

महाश्वेता देवी : अन्धकार के आवरण / 50

रामवृक्ष बेनीपुरी : मैं कैसे लिखता हूँ! / 53

कृष्णा सोबती : असल बात अच्छे गणित की नहीं,
अच्छी ज़मीन की होती है / 55

अमृता प्रीतम : मंटो : एक स्याह लकीर / 58

कुछ पढ़िये कि लोग कहते हैं

राहुल सांस्कृत्यायन : इतिहास-पुरुष / 62

बनारसीदास चतुर्वेदी : हिन्दी-पत्रकारिता में मिशनरी
भावना का अन्त! / 64

अली सरदार जाफरी : मेरा नारा रोटी और किताब है / 67

अज्ञेय : जीवन व्यापी साधना / 70

फणीश्वरनाथ रेणु : पुरानी याद / 73

निर्मल वर्मा : भारतीय संस्कृति और राष्ट्र / 75

जिन जाना तिन माना

हंसराज रहबर : 'सारे जहाँ से अच्छा' का

गायक-कवि इकबाल / 82

अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी : गैरिज़न और गाँधी / 86

विष्णुकान्त शास्त्री : ...और सफ़र ख़त्म हो गया! / 88

कन्हैयालाल मणिकलाल मुंशी : अधु काका / 91

रामनाथ सुमन : काशी की त्रिमूर्ति / 93

कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर : पं. बनारसीदास चतुर्वेदी / 97

गुरु बसै बनारसी

नज़ीर बनारसी : बचाओ, वतन का शिवाला बचाओ! / 102

शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र' : सूली ऊपर सेज पिया की / 103

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : शऊक्लजी की साखी / 109

हजारीप्रसाद द्विवेदी : जीवन-माधुरी के अमृत-पुत्र
 दिवंगत बेढबजी / 111
 विद्यानिवास मिश्र : मैंने सिल पहुँचायी / 112
 शिवप्रसाद सिंह : महाभैरव की एल्बम में काशी / 115
 नामवर सिंह : राहुल सांकृत्यायन : एक महान जीवन-यात्रा
 का अन्त / 119
 विश्वनाथ त्रिपाठी : क्रॉस और लपटें / 121
 केदारनाथ सिंह : यह अर्थ-विपर्यय का समय है / 125
 काशीनाथ सिंह : जीवन-रेखा / 127

या देखा वा देखिया

सआदत हसन मंटो : कश्मीर की पहाड़ियाँ गालियों
 की गूँज / 134
 इस्मत चुगताई : तिल / 139
 जहूरबख्श : ठाकुर साहब / 145
 गुरदयाल सिंह : काठ की पुतली / 150
 कमलेश्वर : चायघर—सूखा फूल और ताज़ी याद / 153
 मोहन राकेश : एक ठहरा हुआ चाकू / 156
 शैलेश मटियानी : मुक्ति / 164
 राजेन्द्र यादव : अभिमन्यु की आत्महत्या / 170
 ज्ञानरंजन : दिलचस्पी / 175
 मलयज : काठ का गगन, चार सिमों के पंख / 181
 कृष्णबलदेव वैद : त्रिकोण / 184
 विजयमोहन सिंह : एक छोटे बच्चे का हाथ / 187

भीजै दास कबीर

अमृतलाल नागर : महामति चाणक्य यू.एन.ओ. में / 192
 वासुदेवशरण अग्रवाल : विज्ञान की आदि उपलब्धि—
 अग्नि / 196

भगवतशरण उपाध्याय : कबीर अमेरिका में / 199
 नेमिचन्द्र जैन : हमें अभिनेय नाटक दो / 201
 विष्णु नागर : मेरा एक भाई होगा, उसका नाम मारुति होगा / 205

सुरति शब्द में लीन

शमशेर बहादुर सिंह : पहचान / 212
 गजानन माधव मुक्तिबोध : रंगों में सुलगी हुई एक सुनहली
 शनाख / 213
 त्रिलोचन : आज मैं तुम्हारा हूँ / 216

नागार्जुन : कोयल आज बोली है / 216
 भवानीप्रसाद मिश्र : शाम की परछाइयों में / 216
 केदारनाथ अग्रवाल : हे मेरी तुम / 217
 श्रीकान्त वर्मा : सूचना / 217
 धर्मवीर भारती : खाली हाथ तुम्हारे लिए / 218
 सर्वेश्वरदयाल सक्सेना : काली परछाई और प्यार का गीत / 219
 दुष्यन्त कुमार : राजपथ पर आ रहा है कौन / 220
 भारतभूषण अग्रवाल : दो पल बेकली के / 221
 गिरिजा कुमार माथुर : रेशमी मूर्तियों की रात / 221
 रामविलास शर्मा : झील की शाम / 222
 सोमदत्त : स्वर्गीय ईश्वर / 223
 विष्णुचन्द्र शर्मा : यदि मैं तुम्हें ! / 223
 कुँवर नारायण : एक कलाकार मित्र को / 224
 त्रतुराज : विश्व विजेता, सोनभद्र, अखंड ज्योति / 225
 अशोक वाजपेयी : उठाये हूँ पृथ्वी / 227

मैं अपनी आवाज़ हूँ

सेज़ार वेलेज़ो / 230
 वोदलेयर : मैं अपनी आवाज़ हूँ / 231
 क्लेयर गॉल : जर्मन / 231
 येवजेनी येवतुशेंको : ईर्ष्या / 232
 वाल्ट ह्विटमैन : मानहट्टा—अमेरिका / 232
 ब्लादीमीर मायकोवस्की : टैक्स कलक्टर से बातचीत / 233
 एडगर एलन पो / 234
 ग्रैब्रेला मिस्ट्राल : बुन रही हूँ एक शरीर / 234
 ली बुक-सा : मृत्यु के क्षितिज / 235
 किम कि-रिम : समुद्र-फूल / 236
 ली वेंग-सू : निर्वासित / 236

अक्षर घट

मुनि कान्तिसागर : सामाजिक दायित्व / 240
 जगदीश : संकल्प निवेदन / 242
 लक्ष्मीचन्द्र जैन : अंजलि / 243
 शरद देवड़ा : एक पत्र अपने पाठकों के नाम / 245
 रमेश बक्षी : सातवाँ दशक—ठीक-ठीक मूल्यांकन / 247
 प्रभाकर श्रृङ्गेत्रिय : इन्द्रप्रस्थ में... / 248
 रवीन्द्र कालिया : किसान और भूमंडीकरण / 250

एक सुनहली शनाख्त में बीते दिनों का यह कुछ

भारत के सांस्कृतिक इतिहास में भारतीय ज्ञानपीठ अनन्य प्रतिष्ठा प्राप्त कर रहा है। उषा की सुवर्ण सम्पदा उषा के लिए नहीं बल्कि संसार में लावण्य और चैतन्य को बढ़ाने के लिए है।

—जी. शंकर कुरुप

स्वतन्त्रता की प्राप्ति के उपरान्त भारतीय संविधान ने जिस प्रकार अपनी राजनीतिक शक्तिबाहुओं से भारतवर्ष की भौगोलिक समग्रता एवं एकता को बनाये रखा है उसी प्रकार यह भारतीय ज्ञानपीठ देशभाषारूपी पंचदशा प्रेमबाहुओं से भारतवर्ष की सांस्कृतिक एकता को साधने के लिए प्रतिश्रुत तपस्वी के रूप में उदित हुआ है।

—कुप्पलि वेंकटप्प पुट्टप्प

साहित्य में अखिल भारतीय मंच की कल्पना निराकार की निराकार ही रही। उसे साकार करने का श्रेय इतिहास भारतीय ज्ञानपीठ को देगा, इसमें मुझे तनिक भी सन्देह नहीं है।

—रामधारी सिंह दिनकर

साहित्य के प्रति अन्तर में वास्तविक उत्साह और लगन न हो तो ज्ञानपीठ पुरस्कार जैसी भव्य योजना सम्भव ही न होगी।

—आशापूर्णा देवी

आप जानते हैं कि हमारे देश में ज्ञानपीठ सबसे प्रतिष्ठित साहित्यिक सम्मान के रूप में जाना जाता है और इसे पाना किसी के लिए भी आदर और सम्मान का विषय है। अन्य साहित्यों की तुलना में आधुनिक कन्नड़ साहित्य का इतिहास सीमित है लेकिन इसके बावजूद इस भाषा में कई लोग ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं जो इस साहित्य की विलक्षणता का प्रमाण है।

—गिरीश कर्नाड

इतिहास साक्षी है कि इंसान ने हर दौर में इस बात का खयाल रखा है कि उसकी भौतिक प्रगति उसकी आध्यात्मिक प्रगति से अलग न हो बल्कि जहाँ तक मुमकिन हो भौतिक और आध्यात्मिक प्रगति में सन्तुलन कायम रहे। ज्ञानपीठ भी इसी का एक रूप है। पिछले सत्तर वर्षों में इस संस्था ने जिस लगन और ईमानदारी से इस काम को अंजाम दिया है वह हर तरह से प्रशंसनीय है।

—गोपीचन्द्र नारंग

साहित्य के प्रति निरन्तर आस्था, यही है भारतीय ज्ञानपीठ और हम लेखकों की अनेक पीढ़ियों की साझा पूँजी।

—मृदुला गर्ग

भारतीय ज्ञानपीठ का एक छोटा-सा हिस्सा बनने के बाद, टुकड़ों-टुकड़ों में लगभग साल भर से मैं इसकी सुनहली शनाख्त तक पहुँचने के लिए, इसके अभिलेखागार (आर्काइव्ज) में चक्कर काटता रहा हूँ। मैंने इस आर्काइव्ज में प्रकाशित, अप्रकाशित या अल्प-प्रकाशित सामग्री में उतरने और पढ़ने का एक क्रम बनाया। उपलब्ध ऑडियो-वीडियो रिकार्डिंग्स से रूबरू होता रहा। आरम्भ से हुए आयोजनों की सुनहरी तस्वीरों को जेहन में कैद करता रहा। यकीनन एक संस्था के चमकते अतीत से गुज़रना, परम्परा और इतिहास को जानने का एक उपक्रम मात्र था। मैं सब कुछ से गुज़र गया हूँ ऐसा नहीं। मैं साहित्य के निर्माताओं की एक-एक पंक्ति, एक-एक चित्र और उनके बोले पर या ठिठका रहा या फिर खो सा गया। बीसवीं

सदी के साहित्य के कीर्ति स्तम्भों से 'ज्ञानोदय' और 'नया ज्ञानोदय' में मिलना, उन्हें अबरना-संजोना जैसे एक जरूरी काम बन गया। सब कुछ अच्छे हालात में मिला हो, ऐसा भी नहीं। उनका डिजिटली पुनर्वास भी आसान नहीं। रचना और रिकॉर्डिंग्स, तस्वीरों को एक तरतीब देने में समय निकलता गया।

इस वर्ष भारतीय ज्ञानपीठ के 70 वर्ष और संयोगवश ज्ञानपीठ सम्मान के 50 वर्ष हुए हैं। गुजरी सदी में देश आज़ादी की लड़ाई से लेकर पहले, दूसरे महायुद्ध और शीतयुद्ध का गवाह रहा है। इसकी गवाहियाँ हमें ज्ञानोदय में मिलती हैं। इस पत्रिका में ज़िम्मेदार पत्रकारिता के प्रसंग ओर-छोर व्याप्त हैं। पत्रिका का प्रकाशन बेहद मूल्यवान पहल थी। अगर ज्ञानोदय का प्रकाशन न होता तो हम हिन्दी और भारतीय भाषाओं के साहित्यिक इतिहास को शायद ठीक-ठीक न जान पाते। इधर लगभग चार दशकों में दृश्य में आयी पीढ़ी, उस दौर के जरूरी इतिहास से वाकिफ़ हो, जरूरी नहीं। या यूँ कहें उन्हें एक बार फिर उस ऐतिहासिक अतीत से गुज़रना जरूरी है। हमारे पुरखों ने भाषा के निर्माण और उसके विस्तार में जो अथक परिश्रम मिशनरी भाव से किया, वह एक स्तुत्य उदाहरण है। अखबारों से लेकर पत्रिकाओं तक उस समय का लेखन साहित्यिक सुखमात्र के लिए न था, उसमें त्याग और संघर्ष के मूल्य थे। साहित्य की आज की दुनिया वैसी न होती अगर हमारे बीते समय को सुविचारित ढंग से न गढ़ा गया होता। उस दौर के साहित्य ने ही हमें सत्ता का प्रतिपक्ष बनाया और लोकतन्त्र को परिपक्व। 'खाक के पर्दे से' में मार्टिन लूथर किंग, सुभाषचन्द्र बोस, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद और रवीन्द्रनाथ टैगोर, जो ज्ञानोदय में तब प्रकाशित हुए, अपने आप में इस बात के आधार प्रमाण हैं कि देश की सोच और दृष्टि क्या हो। वे तब साहित्य की पत्रिका के अभिन्न अंग हुए। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद तो ज्ञानपीठ सम्मान की प्रवर परिषद के अध्यक्ष बने। आज तो राजनेताओं का साहित्य-संस्कृति से दूर-दूर का रिश्ता है। देश को टूटते हुए देखकर भी उनका दिल नहीं पसीजता। वे इस टूटन के लिए धर्म, जाति, साम्प्रदायिकता, और असहिष्णुता के ग़ैरवाजिब गठजोड़ को समर्थन देने में क़तई नहीं हिचकते। ऐसे में शायद उम्मीद लेखकों-कलाकारों से ही बची हुई है। हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि किसी लेखक या कलाकार ने न धर्म, न जाति, न धर्मान्धता, न साम्प्रदायिकता, न क्षेत्रीयता, न भाषाई लड़ाई का साथ दिया। इसके उलट वे इन सबका विरोध करने में आज तक अग्रणी हैं।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने कहा था— 'सब प्रकार और सर्वत्र शोषण बन्द होना चाहिए—चाहे वह आर्थिक हो, राजनैतिक हो, सामाजिक हो या धार्मिक ही क्यों न हो।' आज हम तरह-तरह के शोषण के शिकार हैं और उन्हीं के विरुद्ध लिखते हैं। विचारधारा कोई भी हो, लेखक किसी भी विचारधारा के पोषक हों, उन्होंने

कभी भी प्रतिगामी ताक़तों का समर्थन नहीं किया। उनका लिखा इस बात का जीवन्त प्रमाण है कि वे सांस्कृतिक बहुलता के पक्षधर हैं। इसी सोच को आप 150वें अंक में आद्यंत उपस्थित पाएँगे।

पिछले सालभर में हमने ज्ञानोदय के पहले अंक से 1965 तक के अंकों को मनोयोग से पढ़ा। इसके अलावा दीगर सामग्री पर चिन्तनपरक दृष्टि डाली और वहाँ से कुछ सहेजा। इस प्रक्रिया में यह जानकर विश्वास गहराया कि 20वीं सदी के ज्योतिर्मय साहित्य को आप से साझा करें। 150वां अंक इसके अलावा दूसरा या दूसरी तरह से सम्भव न था। दो सदियों के बीच एक पुल की जरूरत थी ताकि पीढ़ियों के बीच के अनुभवों से यात्रा करते हुए एक ऐसी इमारत खड़ी जा सके जो अत्यन्त सशक्त हो और कोई शक्ति उसे ज़मींदोज़ न कर सके। हम जानते हैं ऐसी शक्तियाँ आज निर्लज्ज ढंग से आक्रामक हो उठी हैं। वे संस्कृति की विरासत को मटियामेट करने में लगी हुई हैं।

पत्रिका की सीमा में बहुत सा आ न सका। इसलिए इसे प्रथम सोपान मानें। सम्भव हुआ तो एक अंक और लाने का यत्न होगा। इस अंक पर आपकी सम्मति, यह तय करेगी कि इसका अंक कब आना है। इसे हमने 13 खंडों में नियोजित किया है। हर खंड का एक शीर्षक है जिसमें कमोबेश खंड की आत्मा प्रतिबिम्बित है। एक साथ बीसवीं सदी के मूर्धन्य लेखकों का समागम, मेरे लिए स्वप्न सा है। सपना सच हो हर कोई चाहता है लेकिन एक सम्पादक का सपना सच में बदले या न बदले, ये पाठक ही तय करते हैं। इन खंडों में आपको साहित्य की अधिकांश विधाओं में लिखी रचनाएँ मिलेंगी। इन रचनाओं में युगबोध के विलक्षण चित्र हैं। मूल्य गढ़ने में इस साहित्य की अप्रतिम भूमिका है। यह अंक न होकर एक दस्तावेज़ हो उठा है। इसे आप सहेजकर रखना चाहेंगे। मित्रों के लिए यह एक अनुपम उपहार भी है।

कृष्णा सोबती ने लिखा है कि— 'असल बात अच्छे गणित की नहीं, अच्छी ज़मीन की होती है।' इन रचनाओं में किसी गणित को ढूँढ़ना अत्यन्त मुश्किल होगा। ये अच्छी ज़मीन की वो रचनाएँ हैं, जिनके वास्ते लेखकों ने एक किसान की तरह पहले अच्छी ज़मीन बनायी फिर उगाने का काम विवेक के साथ किया। इस ज़मीन में इस विशाल देश की अनेक छवियाँ हैं जिनमें संघर्ष के रास्ते जनमे फल हैं। अपने-अपने स्वाद, सौन्दर्य और वस्तु विभिन्नता के गुणों के साथ। इनका पाठ हमें अचरज से भरता है। इतिहास के बारे में राहुल सांस्कृत्यायन ने सटीक लिखा है— 'इतिहास एक तरफ़ विज्ञान है अर्थात् हृदय को नहीं मस्तिष्क को तृप्त करना उसका काम है, तो दूसरी ओर वह कला का सृष्टा है।' इस बात के आलोक में ही इस अंक की योजना का विचार बना। इसे कला और विज्ञान की तरह पढ़ें तो अनेक अलक्षित अर्थ और उनकी जरूरत आज के सन्दर्भ में आकार लेती दिखेगी।